Topic 34

विसर्ग संधि 2,

भो-भगो-अघो-अ-पूर्वस्य योऽशि।

एतत्पूर्वस्य रोर्यादेशोऽशि। देवा इह, देवायिह।

भोस्, भगोस्, अघोस् इति सान्ता निपाताः।

तेषां रोर्यत्वे कृते-

भो, भगो, अघो या अवर्ण + रु + अश - इस स्थिति में 'रु' (र्) को यकार होता है।

भो, भगो और अघो से पर ("रु" (र्) को यकार हो क्रमशः 'भोय् देवाः' 'भगोय नमस्ते' और 'अघोय याहि' रूप बनेंगे।

हलि सर्वेषाम्।

भो-भगो-अघो-अ-पूर्वस्य यस्य लोपः स्याद्हलि।

भो देवाः। भगो नमस्ते। अघो याहि।

अवर्णपूर्वक यकार का छात्रा हसन्ति है।

सूत्र का व्यवहारोपयोगी अर्थ होगा-

वर्गों के तृतीय, चतुर्थ या पञ्चम वर्ण अथवा ह्, य, व्, र् या ल् परे होने पर भो-पूर्वक, भगो-पूर्वक, अघो-पूर्वक और अवर्ण-पूर्वक पदान्त यकार का लोप होता है।

रोऽसुपि।

अहो रेफादेशो न तु सुपि। अहरहः अहर्गणः।

प्रकृत सूत्र से विहित रकार के स्थान पर 'अतो रोः-०' या 'हशि च' से उकार नहीं होता, क्योंकि उक्त दोनों सूत्र 'रु' के रकार के ही स्थान पर उकार का विधान करते हैं।

P.T.O

रो रि ।

रेफस्य रेफे परे लोपः ।

ढलोपे पूर्वस्य दीर्घोऽणः ।

ढरेफयोर्लो पानिमित्तयोः पूर्वस्याणः दीर्घः ।

पुना रमते । हरी रम्यः । शम्भू राजते ।

अणः किम् - नृढः, वृढः ।